विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

महिला अधिकार, जागरूकता अभियान, समानता, स्टार्ट-अप (नवाचार) तथा सशक्तिकरण

देश को आजाद हुये 77 वर्ष पूरे हो चुके हैं; किन्तु यह दुर्भाग्य का विषय है कि नारी को पुरूषों के समान वे अधिकार जिनका उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 14 व 15 तथा जिनका निर्देश नीति निदेशक तत्वों के अध्याय-IV के अनुच्छेद 38 व 39 में किया है और पुरूषों ने उन कर्त्तव्यों का निर्वहन नहीं किया है, जिनका उल्लेख अनुच्छेद 51क में है, जैसे स्त्रीयों को वह सम्मान नहीं दिया, जिसकी अपेक्षा संविधान निर्माताओं ने की है। नारी आज भी पुरूषवादी भारतीय समाज में भेदभाव की हीनता से उत्पीडित है। फिर भी इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि महिला सशक्तिकरण देश में हो रहा है। महिला सशक्तिकरण में हमारा देश कई देशों की अपेक्षा आगे है। अमेरिका व यूरोप के कई देशों में महिलाओं को मत देने का अधिकार हमारी अपेक्षा देर से मिला था देश की महिलायें सर्वोच्च पदों पर रह कर भी अपने कार्य की कौशल की छाप छोड चुकी हैं। सेना, पुलिस, प्रबन्धन, पंचायतों नगरपालिकाओं, संसद, पायलेट, अंतरिक्ष विशेषज्ञ, शिक्षा व व्यापार के रूप में, देश की सरकार में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, न्यायाधीश, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, कला, खेल के मैदानों में ओलम्पिक में पदक जीतकर अपने अपने पदों पर रहकर कार्य पर समानता की छाप छोड चुकी हैं।

दिनांक 8 मार्च, 2025 को पंजाव व हरियाणा हाईकोर्ट ने एक लैण्डमार्क निर्णय में उपरोक्त बातों पर विशद चर्चा की है और कहा है कि नारी सशक्तिकरण के हेतु अभी बहुत कुछ करना शेष है।

दिल्ली की सरकार ने दो दिन पूर्व ही चुनाव में किये गये वायदे के अनुरूप 2500/– रूपये प्रतिमाह महिलाओं को देने हेतु घोषणा कर आर्थिक रूप से महिलाओं का सशक्तिकरण किया है जो एक ऐतिहासिक घटना है।

दिनांक 8 मार्च, 2025 को देश ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया है।

देश को गर्व है कि महिलाओं की सोच में इच्छा शक्ति है, उन्होंने अपने फौलादी इरादों से सफलतायें प्राप्त की हैं। यह माना जा रहा है कि जीडीपी में महिलाओं का 18 प्रतिशत योगदान है। उद्योगों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 36.6 प्रतिशत है। यह माना जा रहा है कि महिला सम्मान समृद्धि योजना के माध्यम से 77 प्रतिशत महिलायें सशक्त होंगी। लोकसभा में वर्तमान् में 47 महिलायें हैं। इनमें 31 महिला सांसद भाजपा से है। सभी राज्य सरकारों का प्रयत्न है कि राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक सुधारों से महिलाओं को पुरूषों की तरह सशक्त बनाया जावे। देश में यह माना जा रहा है कि नारी एक सशक्त, एक प्रेरणा और आशा है। नारी में सृजन पोषण, परिवर्तन की असीम शक्तियां है।

महिला दिवस पर एक अनूठी पहल हुई है। जिसके अनुसार मोदी की सुरक्षा महिला दल को दी गई थी।

यह सही है कि देश में बदलाव की बयार है। अशिक्षित और कम पढ़ी-लिखी महिलायें भी अब आत्मनिर्भरता की अच्छाई समझ चुकी हैं। छोटे छोटे स्टार्ट-अप के माध्यम से वे सशक्त हो रही हैं। वे समाज में अपनी पहिचान बना पा रही है। ऐसा समय शीघ्र दिखाई देगा जब ये महिलायें अर्थ व्यवस्था में एक अति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती दिखाई देंगी।

देश वही आगे बढेगा उसका विकास होगा जहां नारी का सम्मान होगा। वर्तमान में मोदी के राज में स्टार्ट-अप की सहायता से महिलाओं को उद्यमी बनाया जा रहा है। वित्तीय सहायता और सरकारी योजनाओं से महिलायें सशक्त हो रही हैं। जयपुर में पिछले पांच वर्षों में 838 स्टार्ट-अप को महिलाओं ने ही लीड़ किया है। महिलाओं की वर्तमान कार्यशैली को देखते हुये कहा जा सकता है कि देश शीघ्र ही विकसित देश होगा।

राजस्थान के मुख्यमंत्री के नेतृत्व में आंगनबाडी केन्द्रों पर सेवाओं की गुणवत्ता हेतु नवाचार की योजनाओं में नई दिशा से नई रोशनी प्राप्त हो रही है। ये योजनायें हैं, मुख्यमंत्री अमृत आधार योजना, हर आंगनबाडी सक्षम आंगनबाडी, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, जिम्मेदार पुरूष अभियान व मुख्यमंत्री सुपोषण न्यूट्री-किट योजनायें।

नर कि समान नारी भी तो एक मानव ही है। नारी को नर की तरह सभी अधिकार समान रूप से प्राप्त हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संधियों में नारी को पूजनीया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उन्हें भी गरिमा मय जीने का अधिकार है। नारी को उत्पीडन से मुक्ति के हेतु संरक्षण अन्तर्राष्ट्रीय संधियों में दिये गये हैं। ये संधियां घरेलू कानून के रूप में मान्य हैं और प्रवर्तनशील हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संधि, दी कन्वेंन्शन ऑफ दी ऐलिमिनेशन ऑफ ऑल फॉर्मस ऑफ डिस्क्रीमिनेशन अगेन्स्ट वूमन 1979 हैं। भारत इस संधि का हस्ताक्षर कर्त्ता देश है। इस संधि के द्वारा नारी को नौकरी, वेतन, राष्ट्रीयता, आर्थिक हितों, शादी में, परिवार बनाने और बाल विवाह आदि के विवादों में समानता का अधिकार भेदभाव के बिना दिया गया है। नारी को विकास का पूर्ण अधिकार है।

नारी के देह व्यापार और सेक्सुअल एक्सप्लोइटेशन के बाबत एक और महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संधि है 'दी कन्वेन्शन फॉर दी सप्रेशन ऑफ दी ट्रेफिक इन परसन एण्ड एक्स-प्लोईटेशन ऑफ प्रोस्टीटयूशन ऑफ अदर्स, 1949। इसका संबंध मानव अधिकारों से है। समाज को इसको रोकना है। नारी के देश दोहन को रोकना आवश्यक है, इस पर गम्भीरता से चिन्तन आवश्यक है। चेतना, शिक्षा व जागरूकता की जरूरत है। इसी प्रकार महिला जहां नौकरी करती है वहा सेक्स एब्यूज के कई मामले देखे गये हैं। इसी प्रकार परिवार के सदस्य, पडोसी तथा भ्रष्ट चरित्र के लोगों द्वारा माइनर बच्चियों के रेप के केसेज, उसकी हत्या के केसेज खत्म होने का नाम ही नहीं लेते। कानून कठोर हो गया है, किन्तु बेअसर है। भारत के लोग अपनी नैतिकता के लिये जाने जाते हैं किन्तु सेक्स एक्सप्लोइटेशन के मामलों में लोगों की नैतिकता कहीं खो गई है। फांसी की सजा भी इस कुकृत्य को नहीं रोक पाई है। यह सच है और ऐसा प्रतीत भी हो रहा है कि कानून से ऐसे अपराधों को नहीं रोका जा सकता। संभवत: शिक्षा, सामाजिक चेतना व जागरूकता से इसे रोकना संभव हो।

अधिकांश अखबार, मेगजीन में नारी का अत्यंत ही भोंडे रूप में प्रस्तुतीकरण होता है। सिनेमा के सीन तो ऐसे अश्लील, अशोभनीय होते हैं ऐसी फिल्मों को परिवार के साथ देखना कठिन है। सांकेतिक भाषा में क्या इनका प्रस्तुतीकरण नहीं हो सकता। यद्यपि कानून में ऐसे प्रस्तुतीकरण को अपराध माना गया है, किन्तु कई प्रकार के अवरोध आ जाते हैं जिनके कारण मुकदमा नहीं होता। कुछ तो इसे नारी के स्वाभिमान के विरूद्ध मानते हैं। नारी को पूजनीय व श्रद्धा के रूप में मानने वाले भी अपनी प्रतिक्रिया करने से घबराते हैं। ऐसे चित्रों से नारी का सशक्तिकरण केसे होगा? समाज काफी विकृत हो चुका है, इब समय आ गया है जब नारी को ही अपनी मुक्ति के हेतु अपने गरिमामय जीने के अधिकार का साथ स्नेहमयी, ममतामयी व पूजनीय बनकर भोग्या के स्थान पर पालनहारा बनकर, सिंहवाहिन दुर्गा बनना होगा। नारी को अपने सत्यम शिवम सुन्दरम रूप में पतित पावनी मां बनना होगा। उपनिषद् में कहा है कि सम्पूर्ण रिक्तता की पूर्ति स्त्री द्वारा होती है। मनु कहते है स्त्री के बिना स्वर्ग है ही नहीं। 'दाराधीनस्तथा स्वर्ग:'। जहां नारी की पूजा होती है, वह स्वर्ग है। हमें देश को स्वर्ग बनाना है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:'।

यह सही है भारतीय नारी अब अबला नहीं है। नारी को स्वयं दुर्गा बनकर अपने सम्मान की सुरक्षा करनी है। भ्रूण हत्या देश के लिये कलंक है। दहेज की वेदी पर आज भी नारी की बलि दी जा रही है अब जागृति की बेला है। बालिकाओं को शिक्षित करना है। संविधान नारी को शक्तिशाली देखना चाहता है। देश वही आगे बढेगा उसका विकास होगा जहां नारी का सम्मान होगा। वर्तमान में मोदी के राज में स्टार्ट-अप की सहायता से महिलाओं को उद्यमी बनाया जा रहा है। वित्तीय सहायता और सरकारी योजनाओं से महिलायें सशक्त हो रही हैं। जयपुर में पिछले पांच वर्षों में 838 स्टार्ट-अप को महिलाओं ने ही लीड़ किया है। प्रारम्भ में महिलायें फूड, कपडे व ब्यूटी एक्सेसरीज से संबंधित व्यापार करती थीं अब के 'एआई' और 'एमएल' में भी स्टार्ट-अप प्रारम्भ कर रही हैं।

महिलाओं की वर्तमान कार्यशैली को देखते हुये कहा जा सकता है कि देश शीघ्र ही विकसित देश होगा।

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

चंबल रिवर फ्रंट-अद्भुत और अकल्पनीय

राजेंद्र भाणावत,

गतांक से आगे.......

यह तो बात हुई ईस्ट रिवर फ्रंट की, ईस्ट रिवर फ्रंट से "वेस्ट रिवर फ्रंट" या तो नाव से जा सकते हैं अथवा आप अपने वाहन में बैठकर वेस्ट रिवर फ्रंट के प्रवेश द्वार से प्रवेश कर सकते हैं। पश्चिमी रिवर फ्रंट भी उतना ही अनूठा है जितना ईस्ट रिवर फ्रंट है। इसमें भी विभिन्न प्रकार के घाट विकसित किए गए हैं जैसे जवाहर घाट, गीता घाट, शांति घाट, नंदी घाट। नंदी घाट पर शायद विश्व की सबसे बड़ी नंदी की मूर्ति बनाई गई है। इसके बाद वैदिक, रोशन, घंटी और तिरंगा घाट का निर्माण किया गया है। यहीं पर चंबल नदी में एक उभरा हुआ मंच बनाया है जिस पर राजस्थान के विभिन्न लोक नृत्य का प्रदर्शन निरंतर चलता रहता है। शौर्य घाट पर राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे ढूंढाड़, मेवाड़ , वागड़ ,मारवाड़, शेखावाटी , हाड़ौती आदि क्षेत्रों की स्थापत्य कला के अत्यंत सुंदर नमूने बनाया गए है। ऐसा प्रावधान है कि प्रत्येक क्षेत्र के विशिष्ट व्यंजनों का स्वाद भी यहां पर पर्यटकों को उपलब्ध कराया जाएगा। इसके आगे जुगनू घाट है जहां आप एल ई डी लाइटों का सुंदर बगीचा देख सकते हैं। उसे देखकर भ्रम होता है कि ये प्राकृतिक फूलों का उद्यान है। यहां तक कि ट्यूलिप गार्डन तक एल ई डी लाइटों का बना दिया गया है। सुंदरता में यह विश्व के किसी भी पर्यटक स्थल को टक्कर देने की क्षमता रखता है। यदि आप इस रिवर फ्रंट के एक छोर से दूसरी छोर तक जाएं ,विशेष कर रात्रि के समय, तो ऐसा लगता है कि आप किसी कल्पना लोक में विचरण कर रहे हैं।

चंबल नदी के किनारे प्रकाश की अनुपम व्यवस्था ,इसे भव्यता प्रदान करती है। जिस प्रकार की अनुभूति आपको यहां होती है, उसे केवल महसूस ही किया जा सकता है, उसका शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं है। यदि किसी को यह अनुभव प्राप्त करना हो तो उसे कोटा जाकर दो दिन शाम 5 से रात्रि 10 बजे तक रिवर फ्रंट पर समय बिताना होगा। रिवर फ्रंट पर्यटकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। यहां पर विभिन्न प्रकार की फिल्मों की शूटिंग की जा सकती है, कई प्रकार के समारोह एवं भोज आयोजित किए जा सकते हैं। इस हेतु आप आवश्यक शुल्क जमा कर के इस अद्भुत दृश्य का आनंद ले सकते हैं। अच्छा होता,यदि जयपुर में आयोजित आईफा 2025 में भाग लेने आए कुछ निदेशकों एवं कलाकारों को कोटा रिवर फ्रंट का एक दिन का भ्रमण करा दिया जाता।

राजस्थान की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं का भी विवरण स्थापत्य कला के माध्यम से यहां प्रस्तुत किया गया है। ऐसी ऐसी व्यवस्था की गई है कि प्रत्येक देश के विशिष्ट निर्माण के पास में उससे से संबंधित थीम आधारित रेस्तरां का निर्माण किया जाएगा ताकि लोगों को वहां बैठकर उसी देश में होने का अनुभव हो सके और उसी देश की स्थापत्य कला ,संगीत ,भोजन आदि का आनंद उठाने का अवसर भी मिल सके। चंबल रिवर फ्रंट की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां पर राजस्थान का लोक संगीत निरंतर आपको सुनाई देता है। साथ ही कलाकारों द्वारा राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के नृत्य का प्रदर्शन निरंतर शाम पांच बजे से रात्रि दस बजे तक चलता रहता है।

प्रकाश की भव्यता, स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने और कलाकारों का प्रदर्शन, कुल मिलाकर ऐसा अद्भुत नजारा प्रस्तुत करते हैं, जो आप जीवन भर नहीं भूल सकते। इस रिवर फ्रंट को बने लगभग डेढ़ वर्ष हो चुका है किंतु अभी तक यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या सीमित है। इसका मुख्य कारण इस नव विकसित स्थल का राज्य सरकार एवं मीडिया द्वारा पर्याप्त प्रचार प्रसार नहीं किया जाना है। शायद इस कारण कि यह रिवर फ्रंट गत सरकार के समय बनाया गया और उसका प्रचार प्रसार करने से, वर्तमान सरकार को यह लगता है, कि पूर्व सरकार की प्रशंसा होगी।

हमारे राजनीतिज्ञों को अपने दलीय स्वार्थ से ऊपर उठकर कोटा में जो उत्कृष्ट पर्यटक स्थल बना है, इसका विश्व स्तर पर प्रचार प्रसार करना चाहिए। इससे न केवल कोटा एक प्रमुख पर्यटन स्थल की तरह स्थापित होगा अपितु आने वाले पर्यटकों से राज्य की आर्थिक प्रगति में भी सहायता मिलेगी। यदि सरकार चाहे तो यहां पर आने वाले पर्यटकों की संख्या में कई गुणा वृद्धि हो सकती है। यह इसलिए भी अत्यधिक आवश्यक है कि कोटा की अब तक की छवि एक पर्यटक स्थल के रूप में नहीं रही है। इसे अब स्थापित करने का सुनहरा अवसर है।

पर्यटन विभाग को चाहिए कि वह एक पर्यटन सर्किट बनाए जिसमें झालावाड़ का गागरोन किला, दरा अभ्यारण , बूंदी का किला ,मुकुंदरा टाइगर अभ्यारण्य एवं कोटा के नव विकसित रिवर फ्रंट को शामिल करे। वर्तमान में इसके संधारण पर पूरा व्यय कोटा विकास प्राधिकरण द्वारा किया जा रहा है ,जो लंबे समय तक संभव नहीं है। इस उत्कृष्ट निर्माण का ठीक तरह संधारण करने के लिए बहुत धनराशि व्यय करने की भी आवश्यकता होगी। यह तब ही संभव है जब इसे संचालित और संधारित करने हेतु किसी दक्ष और उत्कृष्ट अनुभवी निजी एजेंसी को लंबे समय के लिए सौंपा जाये।

यदि इस बारे में शीघ्र निर्णय नहीं लिया गया और इसका संधारण नहीं हुआ तो इस पर खर्च हुए 1200 करोड रुपए व्यर्थ होते अधिक समय नहीं लगेगा। फलस्वरूप एक महत्वाकांक्षी परियोजना शीघ्र ही एक गंदगी के ढेर और खंडहर में बदल जाएगी। आशा की जानी चाहिए कि राज्य सरकार इस नव विकसित विश्व स्तरीय पर्यटन स्थल के महत्व को देखते हुए क्षुद्र मानसिकता से ऊपर उठकर इस भव्य उपलब्धि को विभिन्न संचार माध्यमों से जन-जन तक पहुंचाएगी। यदि कोटा में एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बन जाए ,तो यहां पर बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय पर्यटक भी, इससे आकर्षित होकर यहां पर आ सकते हैं। कोटा में एक ऑक्सीजोन पार्क का विकास भी किया गया है जो एक अतिरिक्त आकर्षण कोटा में हुआ है।

यह अच्छा पार्क है, जहां विभिन्न प्रकार की सुविधाएं विकसित की गई हैं जो शुद्ध वायु और ऑक्सीजन नागरिकों और पर्यटकों को उपलब्ध कराती है। इसे सिटी पार्क का नाम दिया गया है। वर्तमान में सिटी पार्क के लिए प्रवेश शुल्क100 रुपए तथा रिवर फ्रंट के लिए प्रवेश शुल्क कल 200 है। यह एक प्रकार से चार डॉलर होता है, जबकि यही आकर्षण विश्व के किसी अन्य देश में होता ,तो इसका प्रवेश शुल्क कम से कम 50 अर्थात लगभग 5000 होता। आशा है सरकार रिवरफ्रंट की पर्यटकीय संभावना को देखते हुए इसका जोर शोर से, सभी संचार माध्यमों से, प्रचार करेगी ताकि अधिकाधिक पर्यटक कोटा आएं और राज्य की आर्थिक प्रगति में योगदान करें।

राजेंद्र भाणावत, पूर्व आईएएस
पूर्व निदेशक, पर्यटन विभाग, राजस्थान

नौंवी कक्षा के दौरान ही स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े थे पं.भवानी सहाय शर्मा

डॉ. डी. सी. मीना

शेर-ए-राजस्थान के नाम से प्रसिद्ध पंडित भवानी सहाय शर्मा का जन्म माता जीवनी एवं पिता रामचन्द्र शर्मा के यहां अलवर जिले के राजगढ़ कस्बे में 21 मार्च 1909 को हुआ। इनके पिता पंडित रामचन्द्र रेल विभाग में बांदीकुई कस्बे में गार्ड के पद पर कार्यरत थे। भवानी सहाय ने प्रारंभिक शिक्षा राजगढ़ में तथा मिडिल तक की शिक्षा बांदीकुई से प्राप्त की। मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए दिल्ली के रामजस कॉलेज में दाखिला लिया। भवानी सहाय 1926 में कक्षा 9वीं में पढते थे, उसी समय उन्हे ऐतिहासिक एवं राजनीतिक पुस्तके पढने का शौक हुआ। आनंद मठ उपन्यास ने भवानी सहाय को राष्ट्रवाद के प्रति प्रेरित किया। चांद का 'फांसी अंक' और 'भारत में अंग्रेजी राज' 'पेशावर से मास्को' 'रंगभूमि' जैसी पुस्तकें पढकर वो राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति और मुखर हो गये। इसी समय उनका परिचय कैलाशपति नामक क्रांतिकारी से हुआ जो तत्समय हिन्दुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) की दिल्ली शाखा के ऑर्गेनाइजर थे।

हिन्दुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन दल में अनुशासन एवं गोपनीयता के नियम बहुत कठोर थे। पं.भवानी सहाय को लगातार छ: माह तक उक्त दल की कठिन परीक्षा से गुजरने के पश्चात ही दल में शामिल किया गया। उनकी गतिविधियों पर गुप्तचर एजेंसियों को संदेह होने लगा तो उन्होंने छात्रावास छोड़ दिया और किराये पर कमरा लेकर रहने लगे। दल की ओर से पं.भवानी सहाय को दिल्ली आने जाने वाले सदस्यों के आवास एवं सुरक्षा का काम सौंपा गया था। चन्द्रशेखर आजाद स्वंय भी एक रात पं.भवानी सहाय के कमरे पर रूके। सन् 1927 में पं.भवानी सहाय को हिन्दुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की दिल्ली शाखा का सहायक ऑर्गेनाइजर नियुक्त किया गया। जब लाहौर षडयंत्र केस में जयदेव कपूर की गिरफ्तारी हुई तो जयदेव कपूर के कोट की जेब से भवानी सहाय का नाम एवं पता लिखा एक पर्चा मिला। इस पर्चे में अंकित पते पर पहुंचकर पुलिस निरीक्षक पं.भवानी सहाय के भाई देवी सहाय को लेकर पं.भवानी सहाय के पते पर दिल्ली पहुंचे जहां पुलिस निरीक्षक ने पं.भवानी सहाय से गम्भीर पूछताछ की लेकिन वो अपनी चतुराई से बच गये तथा पुलिस निरीक्षक ने उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया। जब बड़े भाई को पं.भवानी सहाय की क्रांतिकारी गतिविधियों के बारे में पता चला तो उन्होने यह राह छोड़कर घर बसाने की सलाह दी तो पं.भवानी सहाय ने उत्तर दिया कि "अब मेरे जीवन का एक ही लक्ष्य है भारत माता को आजाद कराना।"

पं.भवानी सहाय की निष्ठा एवं समर्पण से चन्द्रशेखर आजाद अत्यधिक प्रभावित थे। इसलिए आजाद ने उन्हे स्वंय पिस्तौल चलाना सिखाया। पं.भवानी सहाय अपने साथियों के साथ दिल्ली के समीप नलगढ में हथयारों का प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। मवाना (मेरठ), टाटेरी (बागपत), हापुड, बलूचपुर इत्यादि पं.भवानी सहाय के गुप्त सुरक्षित ठिकाने थे। पं.भवानी सहाय प्रथम बार 28 अगस्त, 1931 को दिल्ली षडयंत्र केस के फरार क्रान्तिकारी के रूप में गिरफ्तार किये गये लेकिन प्रशासनिक एवं वित्तीय कारणों से मुकदमा ना चलाकर धारा 110 सीआरपीसी का मुकदमा बनाकर 10,000 रूपये की जमानत पर रिहा कर दिया। इसी दौरान लोथेन ट्रेन आउटरेज केस में इनकी संदिग्ध भूमिका के आधार पर 26 फरवरी, 1932 को उन्हें "स्पेशल पावर आर्डिनेंस" की धारा 3 में हिरासत में लिया गया। पं.भवानी सहाय कुख्यात क्रान्तिकारी संगठन हरबंधु समाजदार पार्टी से बहुत गहरे से जुडे हुए थे। अगस्त 1931 में उनकी गिरफ्तारी के समय जो 'साईकिल' उनसे बरामद की गई थी, वह हरबंधु समाजदार पार्टी की थी तथा जो 'घड़ी' बरामद की गई थी, वह हरबन्धु समाजदार पार्टी के क्रान्तिकारी मंतोष की थी।

पं.भवानी सहाय ने सन् 1933 में जेल प्रशासन से बेनिटी कॉलेज शीफिल्ड (ब्रिटेन) से पत्राचार के माध्यम से मैकेनिकल इंजीनियरिंग का कोर्स करने की अनुमति मांगी जिसे संयुक्त प्रांत के मुख्य सचिव श्री जे.एम.क्ले ने यह कहते हुए खारिज कर दिया कि 1. पत्राचार को सेंसर करना पडेगा जिसके लिए जेल अधीक्षक जैसे अति व्यस्ततम व्यक्ति के पास समय नहीं है। 2. प्रस्तावित अध्ययन को आगे बढाने के लिए कैदी को संभवतय उन उपकरणों के उपयोग की अनुमति देनी होगी जो उसे सौंपना सुरक्षित नहीं है 3. आतंकी गतिविधियों में सम्मिलित होने के कारण वह इस ज्ञान का अन्यथा उपयोग कर सकता है। 3 अगस्त 1933 को भवानी सहाय ने गर्वनर जनरल को पत्र लिखकर निवेदन किया कि उन्हें बिना ट्रायल के संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया गया है। देश की राजनीतिक परिस्थितियां बदल रहीं हैं तथा प्रतिदिन निर्दोष बन्दियों को रिहा किया जा रहा है तथा प्रार्थी का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। अत: प्रार्थी को अनिश्चितकालीन अवधि की हिरासत से रिहा किया जावे। उक्त प्रार्थना पत्र को गर्वनर जनरल द्वारा 24 जनवरी 1934 को अस्वीकृत कर दिया गया। नैनी जेल में भर्ती होने पर भवानी सहाय का वजन 129 पाउण्ड था जो लगभग 06 माह तक बीमार रहने के कारण घटकर 110 पाउण्ड रह गया। 29 जनवरी 1934 को जेल अधीक्षक ने आई.जी. जेल उत्तर प्रदेश को पत्र लिखकर कहा कि पिछले 06 माह से उनके स्वास्थ्य में लगातार सुधार हो रहा है तथा अब उनका वजन 123 पाउण्ड हो गया है। भवानी सहाय ने 17 मई 1933 को नैनी जेल से अपने बडे भाई को पत्र लिखकर अवगत कराया कि "स्वास्थ्य अभी बिल्कुल अच्छा नहीं है.....आप किस कारण से मुझ अभागे को मिलने नहीं आये.....आप नहीं आ सके तो कृपया मेरी घडी डाक द्वारा भेज देना......मुझे उसके बिना अपने नेयम से रहने में बहुत कष्ट होता है।" भवानी सहाय नैनी जेल में "व्यथित" नाम से साहित्य सृजन करते थे। उन्होंने अपने भत्तों में से पैसे बचाकर 'रेमिंग्टन रैण्ड' का हिन्दी टाइपराइटर खरीदा, स्टेट प्रिजनर की हैसियत से अपने लैटर हैड छपवाये।

भवानी सहाय ने 1938-39 में अनेक कविताएं लिखीं जिनमें 'गत यौवन' 'जुगनू की ज्योति' 'गीतिका' 'अश्रुधारा' 'संध्या' 'भौंरे का कली के प्रति' 'वृक्ष का पुष्प के प्रति' 'बसन्त प्रभात' 'उलझन' 'रजनी' 'अविरल आंसू' 'भ्रमरगान' 'भगनदूत के प्रति' 'रोलो अपने अन्तस्थल में' 'चाह नहीं कुछ तुमसे पाउं' 'व्यथा' 'आज बने हो क्यों उन्मन' 'बाल विधवा' 'पनहारिन' 'अभिलाषा'इत्यादि कविताएं प्रमुख हैं।

भवानी सहाय के भाई देवी सहाय ने महात्मा गांधी को भवानी सहाय को रिहा करवाने के संबंध में लिखे गये पत्र के प्रत्युत्तर में महात्मा गांधी ने 24 फरवरी 1938 को पत्र द्वारा लिखा कि "भाई देवीसहाय, सब कैदियों के लिए मेरी कोशिश तो चल रही है"। इसी क्रम में 25 मार्च 1938 को विधानसभा में मोहन लाल सक्सैना द्वारा तीनों राज्य कैदियों श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा, श्री वैशम्पायन एवं भवानी सहाय शर्मा की रिहाई के संबंध में उठाये गये प्रश्न के उत्तर में सरकार द्वारा जवाब दिया गया कि "जब तक लोकहित में उचित समझा जाएगा इनको हिरासत में रखा जायेगा"। अंग्रेजों द्वारा उक्त कैदियों की रिहाई के लिए अनुचित मांगों को नहीं मानने पर 11 जनवरी 1939 को लाल बहादुर शास्त्री ने दिल्ली जेल में भवानी सहाय को पत्र लिखकर उनके साहस की प्रशंसा की, साथ ही रिहा नहीं होने पर दुख भी प्रकट किया। उन्होंने सुझाव दिया कि वर्तमान परिस्थितियों में अहिंसा के द्वारा ही कार्य हो सकता है। 16 मार्च 1939 को विधानसभा में श्री मोहन लाल सक्सैना ने स्थगन प्रस्ताव के माध्यम से ज्वाला प्रसाद शर्मा, श्री वैशम्पायन एवं भवानी सहाय शर्मा का बिना ट्रायल चलाये हिरासत में रखने का मुद्दा उठाया। इस प्रकार देश में उनकी रिहाई का वातावरण तैयार हो रहा था।

जेल में भवानी सहाय के साथ अजमेर के श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा एवं झांसी के श्री वी. वैशम्पायन भी थे। श्री वैशम्पायन ने अपने संस्मरण "अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद" में लिखा है कि 1937 में श्री लाल बहादुर शास्त्री जी नैनी जेल के विजिटर नियुक्त किये गये थे। उस दौरान हमने श्री शास्त्री जी से जेल से रिहा करवाने हेतु निवेदन किया जिसके प्रत्युत्तर में शास्त्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार उन्हें रिहा नहीं कर सकती, हमारा रिहाई का प्रश्न केन्द्र सरकार के अधीन है।

तब हमने केन्द्र सरकार को लिखित आवेदन किया कि हमें दिल्ली वापस भेजा जाये अन्यथा हम अपनी रिहाई के लिए अनशन करेंगे। इस पर 01 फरवरी 1938 को हमें दिल्ली भेज दिया गया। दिल्ली जाकर हमने पुन: केन्द्र सरकार को पत्र लिखा कि हमें छोडा नहीं गया तो हम भूख-हडताल कर देंगे। इस पर केन्द्र सरकार द्वारा हमसे लिखित में हिंसात्मक कार्यवाही में भाग नहीं लेने तथा दिल्ली एवं पंजाब नहीं जाने का आश्वासन मांगा गया। ऐसा हमारे द्वारा कोई भी आश्वासन नहीं दिया गया तथा मैंने मेरे साथी ज्वाला प्रसाद शर्मा एवं भवानी सहाय शर्मा के साथ

पं.भवानी सहाय शर्मा

भूख हडतात प्रारंभ कर दी। उस समय कांग्रेस का त्रिपुरी अधिवेशन चल रहा था।

उसी अवसर पर गांधी जी ने भी कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के प्रश्न पर भूख हडताल की थी। हमारी 23 दिन की भूख हडताल के पश्चात गांधी जी की मध्यस्थता से हमारा अनशन समाप्त हुआ और हम एक सप्ताह के अन्दर ही 19 मार्च 1939 को छोड दिये गये। जेल से रिहा होने के पश्चात जीविका चलाने हेतु भवानी सहाय ने दिल्ली के कनाट पैलेस में 'न्यू मैन एण्ड कम्पनी' नाम से घडीसाजी का कार्य प्रारम्भ किया एवं हैडफोन का निर्माण किया। वर्ष 1941 में भिवाणी के स्वतंत्रता सेनानी श्री नेकीराम शर्मा की पुत्री विद्यादेवी शर्मा से उनकी शादी हुई। उसके बाद भवानी सहाय ने स्वतंत्रता प्राप्ति तक अपने निवास स्थान राजगढ़, अलवर में प्रजामण्डल आन्दोलन एवं आजादी की लडाई को जारी रखा। राजगढ़ में उन्होंने बिजलीघर, चक्की तथा सूत कताई हेतु बॉबिन फैक्ट्री की स्थापना की। भवानी सहाय राजगढ़ नगरपालिका के अध्यक्ष रहे तथा थानागाजी से राजस्थान विधानसभा के 05 वर्ष तक सदस्य रहे।

15 अगस्त 1972 को प्रधानमंत्री के हाथ से दिल्ली में ताम्र पत्र स्वीकार करते हुए श्री भवानी सहाय ने कहा कि "क्रान्तिकारी कहलाने वाला आदमी केवल इस बात को अपना गौरव समझता था और अपने जीवन का सबसे बडा पुरस्कार मानता था कि उसका जीवन मातृभूमि की सेवा में समर्पित हो जाये। सरफरोशी की तमन्ना उसकी एकमात्र तमन्ना थी, मातृभूमि उसकी एकमात्र देवी थी और स्वतंत्रता उसका एकमात्र लक्ष्य"। उत्तरी भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी पं.भवानी सहाय शर्मा का 7 अक्टूबर 1985 को जयपुर में लम्बी बीमारी के चलते निधन हो गया।

–डॉ. डी. सी. मीना,
आर.ए.एस.

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 21 मार्च, 2025

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2081, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 1:46 तक, सिद्धि योग सायं 6:41 तक, विष्टि करण दिन 3:35 तक, चन्द्रमा रात्रि 1:46 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग रात्रि 1:46 तक है। आज भद्रा दिन 3:35 तक है। आज शीतला माता पूजन, बास्योडा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:04 तक, लाभ-अमृत 8:04 से 11:04 तक, शुभ 12:34 से 7:04 तक, चर 5:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:34, सूर्यास्त 6:35

मेष

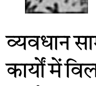

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृष

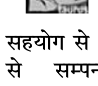

परिवार में आपसी सहयोग बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से आवश्यक कार्य सुगमता से सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

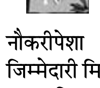

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आज अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

कर्क

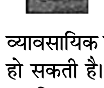

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा।

सिंह

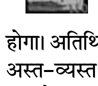

घर-परिवार में ञअनावश्यक धन खर्च होगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक परेशानी अभी बनी रहेगी।

कन्या

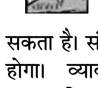

आर्थिक मामलों में परिजनों से सहयोग मिल सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

तुला

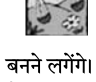

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

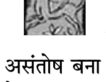

आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

मकर

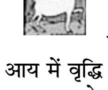

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ

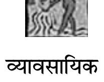

व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मीन

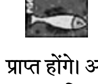

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।